

POETIC EXPRESSIONS TO HONOUR HINDI DIWAS

SELF COMPOSED POEMS

As part of the Hindi Diwas celebrations in school, a **student of Class 8A, Anvi Vyas**, recited a self-composed poem titled “**प्रकृति**”. The poem beautifully captured the charm of nature—its greenery, fragrance, chirping birds, and the refreshing joy of rainfall. With her thoughtful expressions and heartfelt recital, Anvi highlighted the deep connection between nature and human emotions.

Her composition not only reflected her creativity and love for the Hindi language but also left the audience mesmerized. The performance was a reminder of the beauty of self-expression through poetry and the richness of Hindi as a medium to convey emotions vividly. The poem is as follows:

कविता - प्रकृति

सुहाना सा लगे आज मौसम
जैसे प्रकृति प्रफुल्ल हो उठी हो
शांत मन और खुले दिल से
सबको अपने अंदर समा रही हो

हर तरफ हरियाली ऐसी
जैसे आकर्षक बना रही हो
फूलों की सुगंध हर तरफ
प्रकृति को महका रही हो

चिड़िया भी चहक रही हो
जैसे मगन होकर झूम रही हो
हवा में ठंडक भरी है ऐसी
पुलकित होकर बह रही हो

जैसे खुद ही में डोल रही हो
वर्षा की बूंदें हर तरफ
सबको मदहोश कर रही हो
रोज गिर रही हो ओस ।

अन्वी व्यास
कक्षा ८, 'अ'

As part of the Hindi Diwas celebrations in school, our respected teacher **Ms. Shanta** presented a self-composed poem titled “**कुछ और काम**”. The poem was a powerful reminder that true patriotism lies not only in fighting battles but also in upholding values, morality, and responsibility towards society. Through her words, she highlighted the importance of youth power, ethical growth, and the need to awaken the nation’s conscience.

Her heartfelt recital left everyone inspired, emphasizing that Hindi poetry remains a strong medium to convey deep thoughts and social messages.

The poem is as follows:

कुछ और काम

हो जंग लड़ेंगे बहुत मगर...
बस 'जंग' नहीं है देशप्रेम,
इतर इसके कई काम पड़े, जो,
कर के हमें दिखाना है।।
सो रही देश की नैतिकता को, फिर से हमें जगाना है।।
युवा शक्ति की ताकत को,
तकनीक सीढ़ियों से चढ़कर,
मर्यादा-लक्षित हो समाज,
यह पाठ हमें बतलाना है।।
सो रही देश की नैतिकता को फिर से हमें जगाना है।।
हो रहा विकास है अर्निबाध्य,
पर भूल चुकी इस पीढ़ी को,
है नहीं विकास बस तकनीकी,
विश्लेषण-आत्म बताना है।।
सो रही देश की नैतिकता को फिर से हमें जगाना है।।
होती गर गुण की बस पूजा,
बिन मर्यादा औ नैतिकता
तब नहीं गजानन, दस-आनन का ,
सीस सकल पूजित होता।।
गिरती नैतिकता वालों में, माँग हलाहल त्रिपुरारी से,
आज हमें बँटवाना है,
सो रही देश की नैतिकता को, फिर से हमें जगाना है।।
मेरी कलम से -
शान्ता